National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(61): 156-159
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

ज्योति देवी
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त-विश्वविद्यालय

Correspondence:
ज्योति देवी
शोध छात्रा, संस्कृत विभाग,
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त-विश्वविद्यालय

डॉ निरञ्जन मिश्र द्वारा रचित महाकाव्यों की विशेषताएँ
(ग्रन्थिबन्धनम् महाकाव्य के विशेष सन्दर्भ में)

ज्योति देवी

महाकाव्य शब्द 'महत्' और 'काव्य' इन दो शब्दों से मिलकर बना है। इसमें जीवन के विस्तृत आयाम समाहित होते हैं। महाकाव्य मानव जीवन के स्वरूप को प्रतिबिम्बित करने वाला एक ऐसा उत्कृष्ट प्रबन्ध काव्य माना गया है जिसमें किसी देश की संस्कृति समाज की समष्टि, समग्रता एवं मानवता सुरक्षित रहती है। संस्कृत महाकाव्यों में भारतीय संस्कृति के चारों स्तम्भों 'धर्मार्थकाममोक्षम्' के माध्यम से आदर्श जीवन की प्रतिष्ठा की गई है। संस्कृत महाकाव्य का मुख्य आधार इतिहास और पुराण रहा है। इतिहास और पुराण दोनों में जीवन और जगत् को विराट फलक पर चित्रित किया गया है और दोनों का मूल रूप लेकर महाकाव्य स्वतन्त्र काव्य-विधा के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। संस्कृत महाकाव्य-विधा का लेखन अति प्राचीन काल से चला आ रहा है।

आधुनिक काल में महाकाव्य विधा लेखन को समकालीन भारतीय भाषाओं के साहित्य की अपेक्षा संस्कृत में बहुत अधिक प्रशंसा मिली। आधुनिक कवियों ने प्राचीन आचार्यों के लक्षणों को स्वीकारने में कुछ स्वतन्त्रता भी बरती है, वहीं कुछ ने तो उनकी उपेक्षा भी की है। इस प्रकार एक ओर परम्परागत रूढ़ लक्षणों के अनुसार महाकाव्य लिखे गए हैं तो दूसरी ओर परम्परा के आग्रह से मुक्त होकर महाकाव्य लिखे गए। आधुनिक संस्कृत महाकाव्यों में लाभ के उद्देश्य से प्रशस्ति गान की प्राचीन मानसिकता शिथिल हुई है और कुछ उत्तम कोटि के सरल महाकाव्य लिखे गए जिनमें विविधता के साथ राष्ट्रीय चेतना को बहुत महत्त्व दिया गया है। 20 वीं शताब्दी से संस्कृत महाकाव्य का स्वर्ण युग माना गया है। आज हम 21वीं शती में प्रवेश कर चुके हैं। आधुनिक संस्कृत महाकाव्यकारों ने प्राचीन संस्कृत महाकाव्यों से पर्याप्त प्रेरणा ग्रहण की है किन्तु अपने नवोन्मेष प्रतिभा को अन्धानुगामी नहीं रखा है। इन महाकाव्यों में परम्परा के प्रति श्रद्धा और आधुनिकता के प्रति आकर्षण दोनों का मिला-जुला रूप दिखाई देता है।

वर्तमान युग में समाज, धर्म और दर्शन की व्याख्या मनुष्य के लिए ग्राह्य होने के साथ-साथ भारतीयता के आत्म-गौरव की परिचायिका है। भारतीय समाज धर्म एवं दर्शन की विमुखता के कारण आस्था प्रश्न चिह्न के रूप में परिणत हो रही है परन्तु अन्तःकरण में विद्यमान मानव का दिव्यत्व उसे निःश्रेयस सिद्धि हेतु प्रेरित करता है। अतः आज के संक्रान्तिकाल में मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए सम्यक् दिशा निर्देशन के क्रम में यह महाकाव्य कितने प्रासंगिक हैं, इसे हम तभी सिद्ध कर सकते हैं, जब हम इनका सर्वांगीण अध्ययन करें। 21 वीं शती के संस्कृत कवि वर्तमान परिस्थितियों के प्रति कितना अधिक संवेदनशील है इसकी झलक हमें उनके काव्य में स्पष्ट परिलक्षित होती है। वर्तमान 12-13 वर्षों में रचित संस्कृत महाकाव्यों का विविध आयामों की दृष्टि से अध्ययन करना आवश्यक है। इधर कुछ वर्षों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ पूर्व से अधिक परिवर्तित होती जा रही हैं।

विश्व के साथ-साथ भारतीय समाज में भी विघटनकारी प्रवृत्तियाँ दृढ़ होती जा रही हैं। ऐसी स्थिति में संस्कृत काव्यकार क्या समाधान प्रस्तुत करते हैं, इसी जिज्ञासा से मैंने इन महाकाव्यों को अपने अध्ययन का विषय बनाया है।

कविवर **डॉ निरञ्जन मिश्र** जी आधुनिक साहित्य धारा के प्रतीक है। ये सर्वदा नये मार्ग के पथिक हैं। केवल पूर्वोक्त तथ्यों को स्वीकार करने में इनकी प्रीति नहीं है। अपनी प्रतिभा से विचार करने के बाद ही ये किसी तथ्य को स्वीकारते हैं या नकारते हैं। सामाजिक समस्याओं पर इनका अभिमत वास्तव में सहृदयहृदयानुरञ्जक होता है। आत्मानुभूत विषयों का वर्णन वस्तुतः सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। काव्य की आधुनिक सभी विधाओं में इनकी लेखनी अबाध गति से चलती है। महाकाव्य, लघुकाव्य, शतककाव्य, चम्पूकाव्य, गीत, गजल, बालगीत, बाल कविता, दीर्घकविता, इत्यादि सभी विषय इनकी लेखनी का नृत्यस्थल है। सामाजिकविषयों को अपना आधार बनाकर इनकी कविता अपना नृत्य प्रस्तुत कर देती है, जो किसी सामान्य सामाजिक के लिये आदर का विषय बन जाती है। कविवर ने गरीबी को मानो चिरसंगिनी की तरह देखा है।[1]

इनके वर्णनीयविषयों का क्षेत्र सर्वत्र दिखाई देता है। ग्रामीणसमाज, युवतियों की सामाजिकरीतिभंजकता, भ्रष्टाचार, जनवञ्चकता, लोकतन्त्र का कुपथगामित्व, न्यायव्यवस्था, पर्यावरणहानि, स्वार्थलोलुपता, शिक्षा का ड्रास, आरक्षणव्यवस्था, आध्यात्मिकता का पतन, दहेजप्रथा, नारीविलास, नारी की दशा. इत्यादि सभी विषय इनकी कृतियों में समाये हुए हैं। वस्तुतः इनकी समग्र कृतियों का विवेचन करने के लिये एक नहीं अपितु कई शोधों की आवश्यकता है।

इनकी कृतियाँ निम्नांकित हैं। इन कृतियों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।व्याख्यात्मक, शोधात्मक, अनुवादात्मक, मौलिक (कथा, लघुकाव्य, महाकाव्य), हिन्दी भाषा की रचना।[2]

1 व्याख्यात्मक[3] - 1 कुवलयानन्द (हिन्दी टीका) 2 नलचम्पू (प्रथम उच्छवास, हिन्दी संस्कृत टीका) 3 मदालसा चम्पू (सम्पादन एवं हिन्दी टीका) 4 मुद्राराक्षसम् (संस्कृत हिन्दी टीका,) 5 नैषधीयचरितम् प्रथम सर्ग की संस्कृत हिन्दी टीका 6 नैषधीयचरितम् तृतीय सर्ग की हिन्दीसंस्कृत टीका।

2 शोधात्मक[4] - 1 निबन्धात्मक काव्यप्रकाश भाग 1, निबन्धात्मक काव्यप्रकाश भाग 2, निबन्धात्मक काव्यप्रकाश भाग 3

3 अनुवादात्मक[5]- 1 आमोद तरङ्गिणी मूल खट्टर ककाक तरंग, (मैथिलीभाषा) 2 चित्रलेखा- अनूदित हिन्दी चित्रलेखा

इस श्लोक में कवि यह स्पष्ट करते हैं कि नारी के जीवन में क्या बंधन, कब और किस प्रकार आएँगे—

4 मौलिक[6] - 1 काव्यमाला (पाँच लघु काव्यों का संग्रह) 2 काव्यकुञ्जम् (चार लघु काव्य एवं स्फुट कविता का संग्रह) 3 गीत-वल्लरी 4 ग्रामशतकम् 5 प्रमत्तकाव्यम् 6 कुटजकुसुमम् - 7 मनोहर कथावली (बालकथा) 8 अरण्यरोदनम् 9 वन्दे भारतम् गङ्गापुत्रावदानम् (महाकाव्यम्) 9 केदारघाटी विधवा बभूव 10 ग्रन्थिबन्धनम् (महाकाव्यम्)

5 हिन्दी रचना[7]-1 अज्ञात प्रेयसी (हिन्दी कविता संग्रह) 2 अनबूझ पहेली (हिन्दी मुक्तक काव्य) 3 सत्य नारायण व्रत कथा (हिन्दीपद्यात्म)

ग्रन्थिबन्धनम् महाकाव्य का परिचय एवं विशेषताएँ

ग्रन्थिबन्धनम् महाकाव्य डॉ निरञ्जन मिश्र द्वारा सामसामायिक घटनाओं व सामाजिक कुरुतियों, व स्त्रीविषयक चिन्तन को आधार बना कर लिखा गया है। महाकाव्य की परम्परा में ग्रन्थिबन्धनम् महाकाव्य नूतन मार्ग को प्रदर्शित करता है। इस महाकाव्य की कथावस्तु पुरानी परंपरा में नए उपकरणों के साथ उपलब्ध है। पात्रों और घटनाओं का वर्णन समयबद्ध है। आधुनिक युग में समाज जिन घटनाओं का सामना कर रहा हैं, उन सभी विषयों को महाकाव्य मे समाहित किया गया है। वर्तमान समाज में दहेज मांगना और देना एक अभिशाप है। इसी विषय को मुख्य आधार बनाकर ग्रन्थिबन्धनम् महाकाव्य को काव्यात्मक रूप दिया गया है। दहेज प्रथा इस महाकाव्य का मूल चक्र है। लोगों के हृदय में कहीं न कहीं यह अनुभव होता है कि महाकाव्य के लेखन में पुराने नियमों का उल्लंघन किया गया है। हालांकि, यहां ऐसा नहीं है, बल्कि नवीन मार्ग का श्रीगणेश हुआ हैं। जिस प्रकार परिवर्तन सृष्टि का शाश्वत सत्य है उसी प्रकार समय-समय पर विचारधाराओं में परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इसी प्रकार महाकाव्य काव्य की दुनिया में परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया है। सोलह सर्गों में रचित यह महाकाव्य भाषा-बोध आदि की दृष्टि से सर्वसाधारण के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है। इस महाकाव्य में अङ्गिङ्ग रस श्रृंगार है तथा अन्य रस भी अङ्ग रूप में यत्र-तत्र प्रतिपादित हैं। छन्द की दृष्टि से अनुष्टुप - उपजाति- वंशस्थ-

वसन्ततिलका- दुतविलम्बित- मालिनी- पञ्चचामर- शार्दूलविक्रीडित आदि का आकर्षक प्रयोग है। अलङ्कारों की चित्तचोरिणी छटा पाठकों को रसास्वाद के सागर में जबरन डुबो देती है।

महाकाव्य में विप्रलम्भ संयोग का नवीनता से वर्णन है। यहाँ कवि की प्रकृति पुराने पथ को नये ढंग से प्रस्तुत करने में परिलक्षित होती है। यह महाकाव्य पूर्व और नवीन दोनों का अद्‌भुत संगम दर्शाता है। नैषधीयचरित की भाँति इस महाकाव्य में भी एक तोता है। वह नायक और नायिका के बीच सेतु का कार्य करता है। हालांकि, यह तोता प्राचीन मार्ग की परवाह किए बिना नवीन मार्ग का अनुसरण करता है। इस महाकाव्य में स्थान - स्थान पर काव्य की शोभा बढ़ाने वाली अनेक सूक्तियां हैं। उदाहरण के लिए -

आत्मरक्षा विधाने को नोद्यमी धरणीतले।

इस महाकाव्य के प्रथम सर्ग में तपोवन का वर्णन, सुकन्या (नायिका) का वर्णन, सुकन्या का वन में भटकना, सुकन्या द्वारा वहाँ एक युवक का दर्शन और सुकन्या द्वारा उठाए गए तोते का कहीं और जाना शामिल है तथा पन्द्रहवें और सोलहवें सर्गों में महाकवि डॉ. निरंजन मिश्र ने बिना दहेज के दो गांठें बांधी हैं और सभी मध्यवर्ती सर्गों में समाज की समस्याओं और वर्तमान समय का समुचित वर्णन किया गया है।

सोलह सर्गों में विभक्त यह महाकाव्य वर्तमान समय के ज्वलन्त विषय (दहेज प्रथा) को आधार बनाकर लिखा गया है। दहेज को लेकर आज समाज की स्थिति क्या बनी हुई है। किस तरह दहेज के कारण वर वधू का समुचित संयोग नहीं हो पाता है। समाज के विघटन का कारण यह दहेज कैसे हो जाता है? इन सभी विषयों को आधार बनाकर इस महाकाव्य की कथा बनायी गयी है। जिसमें सभी पात्र तथा घटनायें कल्पित हैं। महाकाव्य जगत् में यह एक नया उदाहरण है जहाँ सभी कुछ कल्पित है पर वर्णन इतना प्रवाहमय और उपयुक्त है कि सहृदय सामाजिकों को काव्य पद्य पढते हुए चलचित्र सा दीख पड़ता है। जो प्रवाह बलात् सहृदयों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है।

यहाँ कवि ने काव्य को सज्जनों का विलासस्थल बताया है अर्थात् जहाँ सहृदयों का हृदय आनन्दित हो वह काव्य है। केवल शास्त्रोचित लक्षणों का पालन करने के लिये कविता को सहृदयों से दूर कर देना काव्य नहीं है। शास्त्रीयलक्षण तो समय समय पर बदलते रहते हैं। पर कविता की सरसता एक जैसी ही अपेक्षित होती है। लोकोत्तर आहलाद की विलास भूमि काव्य है। यथा

सतां विलासस्थलमेव काव्यं
न लक्षणानां ग्रहणं प्रयत्नात्।
लोकोत्तराह्लादविलासभूमौ
गणो गुणानां गणनीय एव ।।[8]

आजकल कुछ विद्वान् लोग प्राचीन पद्धतियों को अनुसरण करते हुए काव्य को पाण्डित्य प्रदर्शन का स्थल मानने लगे हैं। यही कारण है कि वे कृतियों को देखना भी नहीं चाहते हैं। जबकि यहाँ कवि का मानना है कि कविता की कठिनता कविता को सामाजिकों से दूर कर देती है। कविता जितनी सहजता और सरसता के साथ प्रस्तुत होती है उतनी अच्छी होती है। सामान्य बात है कि यदि काव्य कठिन होगा तो दो चार विद्वान् ही उसे पढ पायेंगे और यदि कठिन नहीं होगा तो अधिकाधिक जनता उसे पढ़ पायेगी। अधिकाधिक लोगों तक कविता की पहुँच होने से कविता एवं काव्य का उपकार ही होगा अपकार नहीं।

वर्तमानसमय श्रीहर्ष और वाणभट्टादि का समय भी नहीं है। समय समय पर सरस सामाजिकों की स्थिति भी बदलती रहती है। जैसा सहृदय होता है काव्य भी वैसा ही प्रतिष्ठा पाता है। इसीलिये महाकवि भवभूति ने लिखा था कि

उत्पस्यते ऽपि मम कोऽपि समानधर्मा
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ।।[9]

इसी प्रकार कविवर निरञ्जन मिश्र ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि आज का समाज केवल कपालकल्पित कलाओं का वर्णन पढ़ना नहीं चाहता है। ऐसे वर्णन से सामाजिकों में अरुचि पैदा होती है। जिससे काव्यजगत् सामाजिकों से दूर होता चला जाता है। अतः सामाजिकों को तदनुकूल विषय चाहिये। ऐसी घटनाओं का वर्णन चाहिये जिसके साथ उसका साधारणीकरण हो सके। इसलिये काव्य जगत् में नया करने के लिये विशाल सम्भावनायें हैं। इस महाकाव्य का प्रवाह अद्‌भुत है। सरसपादवली प्राचीनकाव्यकारों की याद दिलाती है।

इसी क्रम में मिश्र जी का अरण्यरोदनम् नामक एक प्रकार का मुक्तक काव्य है। इसमें कवि समस्त भारतीयों को सम्बोधन कर भारतीय संस्कृति के टूटते स्तम्भों को बचाने की प्रार्थना करता है। कवि जानते हैं कि पाश्चात्यसभ्यता ग्रस्त यह भारतीय समाज इस समय भारतीय संस्कृति की बातें सुनने को तैयार नहीं है, इसलिये काव्य का नाम ही अरण्यरोदनम् रखा गया है। फिर भी कवि अपने विचारानुकूल तर्कों से सामाजिकों को समझाने का प्रयत्न करता है।[10]

वन्दे भारतम् यह मुक्तक काव्य है। यह समसामयिक वर्णनात्मक काव्य है। इसमें वर्तमान समय के भारत की वास्तविक दिशा को चित्रित किया गया है। यहाँ जनता की वञ्चना के लिये सभी नियम

कानून बनते तो जनता के हित में हैं पर जनता का हित छोड़कर केवल नेताओं और अधिकारियों के हित में ही व्यवहृत होते हैं। इस समय यहाँ के राजा और अधिकारीगण बोलते कुछ और हैं पर करते कुछ और हैं। ऐसी परिस्थिति में यह भारतीय जनता वन्दे भारतम् कहने से पीछे नहीं हटती है। इसका कारण है भारतीय जनता में अपनी मातृभूमि के प्रति आदर की भावना, जो भारतीय संस्कृति का प्रबल प्रमाण है। कवि स्वयं सत्यता का प्रमाण देते हुए कहते हैं।[11]

बालाविलासम्आज के चकाचौंध में दुनियाँ में ये भारतीय बालाएँ कैसे अपना जीवनसर्वस्व गँवा बैठती हैं और दुष्टों के हाथों की कठपुतली बन जाती है। यह काव्य मूलतः इसस बात को स्पष्ट करता है कि बालाओं का जीवन अनमोल है। इस दुष्ट समाज से उसे किस तरह बचना है और अपने जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त करना है। आजकल कर तरुणियों के वस्त्रों पर कवि का करारा व्यंग्य देखनेवाला है।[12] यथा

स्वालौकिकत्वमिव तत्र विभावयन्ती
मार्गे सदा सवसनाऽवसनेव भाति।।[13]

सुभगा चरितम् यह सात सर्गों में लिखा गया काव्य है। इसमें उस बाला का जीवन चित्रित है जो आज के समाज में सर्वगुण सम्पन्ना होते हुए भी केवल दहेज के कारण वधू नहीं बन सकती है। यह समाज उसके गुणों की किस तरह अवहेलना करता है। कोई भी वास्तविक रूप से दीनों का सहायक नहीं है। हाँ उसकी दीनता का मजाक उड़ाने के लिए सभी सर्वदा तैयार रहते हैं। लेकिन गुण अपना प्रभाव स्पष्ट अवश्य करता है। यह समाज बीरों से खाली नहीं है। कोई भी बाला यदि गुणयुता है तो विधाता उसके गुणों का फल उसे अवश्य देते हैं। किसी भी स्थिति में कोई भी बाला कुँवारी नहीं रहती है, यह भी सत्य है। गरीब के घर में पुत्री की स्थिति को देखकर एवं सामाजिकों की मानसिक स्थिति को पहचानकर कवि का हृदय रो उठता है।[14]

निष्कर्ष- अन्त में हम कह सकते हैं कि इनकी कृतियों के अध्ययन करने के बाद कविवर डॉ० मिश्र के विविधशास्त्रीय ज्ञान का पता चलता है। साहित्यशास्त्री तत्वों के उपस्थापन के साथ साथ अन्य शास्त्रीय तत्त्वों को भी यथा स्थान कवि ने उपस्थापित किया है। एक शास्त्र के तत्त्व को अन्य शास्त्र के अनुकूल बनाकर उसमें वर्णित करना दोनो शास्त्रों की दक्षता को दर्शाता है। गङ्गापुत्रावदानम् महाकाव्य के प्रथम सर्ग में श्लेष के बल से उत्तराखण्ड में औषधियों एवं धातुओं के विशाल भण्डार को प्रस्तुत करते हुए कवि ने इसे नवीन पाणिनि शास्त्र बताया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गङ्गापुत्रावदानम् - डॉ. निरञ्जन मिश्र; प्रकाशित: मातृसदनम् (हरिद्वार), प्रथम संस्करण 2013
2. गङ्गापुत्रावदानम्: उत्तराखण्ड – वर्णनात्मकः प्रथमः सर्गः — निरञ्जन मिश्र (संपादक: शैलेश कुमार तिवारी); Satyam Publishing House, 2016
3. आमोद-तरङ्गिनी — डॉ. निरञ्जन मिश्र; आर.डी. पाण्डेय सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, 2011
4. काव्यकुञ्जम् - डॉ. निरञ्जन मिश्र; सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, 2006
5. वन्देभारतम् - डॉ. निरञ्जन मिश्र; प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
6. ग्रामशतकम् - डॉ. निरञ्जन मिश्र; आर.डी. पाण्डेय सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, 2011
7. प्रमत्तकाव्यम् - डॉ. निरञ्जन मिश्र; आर.डी. पाण्डेय सत्यम् पब्लिशिंग हाउस, 2011
8. अरण्यरोदनम् - डॉ. निरञ्जन मिश्र; प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015
9. कुटजकुसुमम् - डॉ. निरञ्जन मिश्र; निर्मला प्रकाशनम् (रविकुल विवरण उपलब्ध)
10. केदारघाटी विधवा बभूव - डॉ. निरञ्जन मिश्र; प्रगतिशील प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

सन्दर्भ: -

[1] गङ्गापुत्रावदानम् (स्वामिश्रीनिगमानन्दचरितम्) महाकाव्यम्

[2] वही

[3] गङ्गापुत्रावदानम् कवि का जीवन परिचय एवं कृतियाँ पृ० 19

[4] गङ्गापुत्रावदानम् कवि का जीवन परिचय एवं कृतियाँ पृ० 19

[5] वही

[6] वही

[7] वही

[8] ग्रन्थिबन्धनम् महाकाव्य 16/51

[9] मालतीमाधवम् एक अंक

[10] गङ्गापुत्रावदानम् कवि का जीवन परिचय एवं कृतियाँ पृ० 19

[11] वही

[12] गङ्गापुत्रावदानम् कवि का जीवन परिचय एवं कृतियाँ पृ० 23

[13] बालाविलासम् 30

[14] गङ्गापुत्रावदानम् कवि का जीवन परिचय एवं कृतियाँ पृ० 24